इकाई 3 दक्खन तथा दक्षिण भारत में राजनीति और अर्थव्यवस्था

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आपको निम्नलिखित के विषय में जानकारी मिल सकेगी :

- दक्खन एवं दक्षिण भारत की राज्य व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था पर पड़े भौगोलिक प्रभाव,
- दक्खन एवं दक्षिण भारत की राजनैतिक व्यवस्थाओं की प्रकृति,
- राजनीति तथा अर्थव्यवस्था में प्रतिष्ठित शासक वर्ग (**नायक** तथा **पोलीगार**) की भूमिका, तथा
- उभरते आर्थिक रूझानों, अर्थात इस क्षेत्र मे पुर्तगालियों के आगमन का प्रभाव।

3.1 प्रस्तावना

यह इकाई 8वीं से 15वीं शताब्दी के बीच के घटनाक्रम तथा दक्खन एवं दक्षिण भारत में दो बड़े साम्राज्यों (बहमनी एवं विजयनगर) के पतन के बाद जो कुछ घटा उसके बीच संपर्क सूत्र उपलब्ध कराती है। यह इकाई इस क्षेत्र में मुगलों के प्रवेश के साथ उभर कर सामने आने वाले घटनाक्रमों के लिए भी एक पृष्ठभूमि प्रदान करती है। इस इकाई का अध्ययन करने से दक्खन तथा दक्षिण भारतीय राज्यों की राज्य व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 16वीं शताब्दी के दौरान हुए परिवर्तन तथा निरंतरता को समझने में मदद मिलेगी।

3.2 भौगोलिक विन्यास

राजनैतिक आर्थिक घटना विकास में भौगोलिक व्यवस्था एक अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाती है। दक्षिण भारत तथा दक्खन के कुछ मूल भौगोलिक लक्षणों ने इस क्षेत्र के घटना विकास को प्रभावित किया। (ई. एच. आई.-03 का खंड 3 **देखें**।) मौटे तौर पर नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित समूचा क्षेत्र दक्षिण भारत कहलाता है। हालांकि, तकनीकी तौर पर यदि कहा जाये तो यह क्षेत्र दो बड़े इलाकों से मिलकर बना है, दक्खन तथा दक्षिण भारत।

दक्खन

ई. एच. आई.-03 की इकाई 12 में हमने दक्खन की भौगोलिक स्थिति पर कुछ चर्चा की थी। दक्खन उत्तर तथा उत्तर-पूर्व में नर्मदा एवं महानदी नामक नदियों से घिरा हुआ है; जबकि नीलगिरी की पहाड़ियां और पैनार नदी इसकी दक्षिणी सीमा निर्धारित करती हैं। पश्चिम तथा पूर्व में, दोनों तरफ लंबे समुद्री तट सहित पश्चिमी एवं पूर्वी घाट मौजूद हैं। विशाल पश्चिमी समुद्री तट तथा सहयाद्री पहाड़ियों के बीच का क्षेत्र कोंकण कहलाता है, जो कि दक्खन का एक उप-क्षेत्र है। समूची पट्टी घने जंगलों से भरी हुई है और भूमि पर्याप्त रूप से उपजाऊ नहीं है। सामरिक दृष्टि से इस क्षेत्र का भारी महत्व है। इसलिए वहां पर अनेक मजबूत दुर्गों का निर्माण किया गया था। चौल तथा दाभोल के मशहूर बंदरगाह भी इसी क्षेत्र में पड़ते हैं। यहां पहुंचना कठिन होने की वजह से स्थानीय सरदारों (**देशमुखों**) की निष्ठाएं अक्सर बदलती रहीं और कई बार वह केन्द्रीय सत्ता की भी अवहेलना करते रहे। आप यह पाएंगे कि मराठों के उदय में भी निर्णायक भूमिका भौगोलिक स्थिति ने ही निभाई थी। इसके पहाड़ी एवं जंगली क्षेत्रों के कारण दक्खन राज्यों में घुसपैठ करना कठिन था। किन्तु दक्षिण गुजरात की तरफ से उपजाऊ बगलाना क्षेत्र से होकर यहां आसानी से पहुंचा जा सकता था। इसी वजह से गुजराती शासकों द्वारा बार-बार इस पर धावे बोले गए। अंततः 16वीं शताब्दी में, पुर्तगालियों ने इस क्षेत्र के संतुलन को बदल दिया। मामूली भिन्नताओं के साथ गोवा बहमनी तथा विजयनगर राज्यों के बीच की सीमाएं निर्धारित करता था।

मध्य दक्खन (अजंता पर्वत श्रेणियों से नीलगिरी पहाड़ियों तथा पालाघाट दर्रे तक) में काली मिट्टी मौजूद है जो कि कपास की खेती के लिए अच्छी है। ताप्ती, वर्धा तथा पेनगंगा नदियों के किनारे स्थित महाराष्ट्र के खानदेश तथा बरार क्षेत्र उपजाऊ जमीन के लिए मशहूर थे। इससे खेरला तथा माहुर पर कब्जा करने के लिए मालवा तथा बहमनी शासकों के बीच निरंतर झड़पों का रास्ता तैयार हुआ। (विस्तृत जानकारी के लिए ई. एच. आई.-03 पाठ्यक्रम की इकाई 11,12 तथा 28 देखिए)।

कृष्णा एवं गोदावरी के बीच समतल मैदानी क्षेत्र स्थित है जो कि कपास की खेती के लिए उपजाऊ जमीन के लिए भी मशहूर है। उसके बाद तेलंगाना क्षेत्र पड़ता है। उसकी जमीन रेतीली है और उसमें नमी को बनाये रखने की क्षमता नहीं है। नदियों में भी पूरे वर्ष पानी नहीं रहता है। इसके परिणामस्वरूप जलाशयों से सिंचाई करना जरूरी बन गया। कृष्णा घाटी के साथ कुरनूल की चट्टानें स्थित हैं जहां पर हीरे की मशहूर गोलकुंडा खदानें स्थित थीं। दक्षिणी दक्खन का पठार (जिसका कुछ हिस्सा आधुनिक कर्नाटक राज्य में पड़ता है) भी खनिज स्रोतों (तांबा, सीसा, ज़िंक, लोहा, सोना, मैंगनीज़ इत्यादि) से समृद्ध है।

दक्षिण भारत

कृष्णा-तुंगभद्रा दोआब के दक्षिण में स्थित क्षेत्र दक्षिण भारत का निर्माण करता है। पूर्व में स्थित तटीय क्षेत्र कोरोमंडल कहलाता है जबकि केनरा के दक्षिण में (नेत्रावती नदी से कन्याकुमारी तक) स्थित पश्चिमी क्षेत्र मालाबार के नाम से जाना जाता है, जो कि पूर्व में पश्चिमी घाटों से घिरा हुआ है। इस पर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं (ई. एच. आई.-03 पाठ्यक्रम की इकाई 12 एवं 27 देखिए) कि किस प्रकार से चोल शासकों के दौरान गतिविधियों का केन्द्र मुख्यतः कावेरी क्षेत्र के आसपास तक सीमित था, जो कि, विजयनगर काल के दौरान, पुनः उत्तर-पूर्व में तुंगभद्रा-कृष्णा दोआब (रायलसीमा क्षेत्र) की तरफ सरक गया, जहां विजयनगर की राजधानी स्थित थी। 13वीं से 16वीं शताब्दी के बीच की समूची अवधि में यह क्षेत्र संघर्षों का केन्द्र बना रहा, पहले विजयनगर एवं बहमनी शासकों के बीच तथा बाद में विजयनगर तथा इसके उत्तराधिकारी **नायक** राज्यों तथा बीजापुर के शासकों के बीच। कुतुब शाही शासक भी बार-बार इस टकराव में शामिल रहे।

एक अन्य विशेषता, जिसने 16वीं शताब्दी की दक्षिण भारतीय राज्य-व्यवस्था, अर्थव्यवस्था तथा समाज पर प्रभाव डाला, वह थी (दक्षिण भारत के) उत्तरी क्षेत्र से तेलुगु आबादी का प्रवास,जो 15वीं शताब्दी के मध्य से शुरू हुआ और 16वीं शताब्दी में भी जारी रहा। दिलचस्प बात यह है कि लोगों का यह आगमन तटीय एवं डेल्टाकार नमी वाले भू-क्षेत्रों से हुआ था, जो कि काफी उपजाऊ और अच्छी कृषि व सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्र थे। इस प्रवास के अनेक कारण संभव हो सकते हैं, जैसे बहमनी दबाव, विजयनगर के शासकों द्वारा अपने राज्यों का दक्षिण की तरफ और अधिक विस्तार करने के लिए जानबूझ कर किए गए प्रयत्न, सहज प्रक्रिया अर्थात अधिक घनी आबादी वाले क्षेत्रों से पलायन, प्रवासियों (जो सूखी खेती में निपुण थे) के लिए सखी खेती (जहां सिंचाई के लिए कृत्रिम साधनों का प्रयोग किया जाता हो) करने के लिए यहाँ की

जमीन अधिक अनुकूल रही हो इत्यादि । कारण कुछ भी रहा हो, इसका गहरा सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पड़ा । जैसा कि आप देखेंगे कि सूखी खेती के विकास ने जलाशयों से होने वाले सिंचाई का मार्ग प्रशस्त किया जो कि सोलहवीं शताब्दी के दक्षिणी भारत की अर्थव्यवस्था का निर्णायक हिस्सा बन गई । दूसरे यह कि इसकी अपेक्षाकृत कम उत्पादकता के परिणामस्वरूप अतिरिक्त उत्पादन (surplus) कम प्राप्त हुआ जिसने इस क्षेत्र में उन वर्गों की उत्पत्ति में मदद की, जिन्हें आधुनिक **विद्वान** "पोर्टफोलियो पूंजीपति" कहते हैं ।

3.3 दक्खन में राजनैतिक संरचनाएँ

बहमनी सत्ता के पतन ने दक्खन में 5 राज्यों के उदय का रास्ता तैयार किया (ई. एच. **आई.-3 की इकाई** 28 देखिये) । अफाक़ी कुलीन महमूद गावां की मृत्यु से दक्खन में बहमनी सत्ता को काफी धक्का पहुंचा था और अंततः बहमनी **शासक** महमूद शाह (1482-1518) की मृत्यु से बहमनी शासन का अंत हुआ । इस पतन का निर्णायक कारक अफाकियों व दक्खनियों के बीच लंबे समय से चला आ रहा टकराव था । ये दोनों ही समुदाय असंतुष्ट थे, उदाहरण के लिए, दक्खनियों ने अफाकियों को अतिरिक्त रियायतें देने के लिए सुल्तान को दोषी ठहराया जबकि अफाकियों का विचार था कि उनकी स्थिति अब उतनी सुरक्षित एवं स्थिर नहीं रह गयी है ।

ये कारक जिन्होंने दक्खन राज्यों की स्थापना में अपना योगदान किया था बहमनी शासन के दौरान ही उभरना शुरू हो गये थे । बहमनी शासन पराभव की तरफ बढ़ रहा था । यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि सभी दक्खनी राज्यों के संस्थापक किसी न किसी समय पर बहमनी कुलीन रहे थे तथा जिन्होंने किसी न किसी बहमनी शासक की सेवा की थी । उदाहरण के लिए, यूसुफ आदिल शाह जिसने 1489 में बीजापुर में आदिल शाही वंश की स्थापना की थी बीजापुर का **तरफदार** रहा था । अहमदनगर (1496) में निज़ाम शाही राज्य का संस्थापक निज़ाम शाह बहरी, सहयाद्री पर्वत श्रेणियों में अनेक दुर्गों का प्राभारी रहा था । बीदर (1504) में बरीद शाही वंश के संस्थापक कासिम **बरीद-उल मुमलिक़** ने बीदर के **कोतवाल** के साथ-साथ **वकील** के रूप में भी महमूद शाह के शासन काल में सेवा की थी । बरार (1510) के इमाद शाही वंश के संस्थापक फतहउल्लाह इमाद शाह ने बरार के **तरफदार** के रूप में सेवा की थी और कुतुब शाही वंश की गोलकुंडा (1543) में स्थापना करने वाले कुली कुतबुलमुल्क ने तेलंगाना की गवर्नरशिप संभाली हुई थी ।

बहमनी राज्यों के पतन के बाद उभरे 5 राज्यों में से तीन : बीजापुर, बीदर, तथा गोलकुंडा के संस्थापक अफाकी कुलीन थे । अहमदनगर तथा बरार दक्खनी कुलीनों के अधीन थे । किन्तु अफाकी-दक्खनी कारक शायद ही उनके पारस्परिक संबंधों पर हावी रहा हो । इसकी बजाय यह इस बात पर अधिक आधारित था कि उनके हितों, परिस्थितियों तथा समय की आवश्यकताओं के अनुकूल क्या ठीक रहेगा । तदनुसार कोई अफाकी राज्य किसी एक दक्खनी राज्य के खिलाफ किसी अन्य दक्खनी राज्य तक से हाथ मिलाता रहा या इसके विपरीत भी होता रहा ।

सोलहवीं शताब्दी के दक्खन राज्यों के इतिहास का अध्ययन अलग-अलग करके नहीं किया जा सकता । प्रत्येक राज्य अन्य राज्य की कीमत पर अपने शासन का विस्तार करना चाहता था । जिसके परिणामस्वरूप गठजोड़ एवं जवाबी गठजोड़ एक नियमित लक्षण बने रहे ।

जैसा कि बार-बार इंगित किया गया है भौगोलिक स्थिति ने दक्खन की राजनीति में निर्णायक भूमिका अदा की । अहमदनगर (उत्तर में), गोलकुंडा (पूर्व में) तथा बीजापुर (दक्षिण में) की भौगोलिक स्थिति इस तरह की थी कि उसने उत्तर तथा दक्षिण की तरफ विस्तार के लिए उन्हें पर्याप्त अवसर प्रदान किया । अतः इन राज्यों के पास शक्ति अर्जित करने का प्राकृतिक लाभ बना रहा । बीदर एवं बरार (जो कि मध्य दक्षिण में स्थित थे) पिस गये क्योंकि वे शक्ति गुटों के बीच में स्थित थे, वे किसी न किसी दक्खनी सत्ता के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गए । शायद निष्ठाएँ बदलते रहना ही उनके अस्तित्व के लिए एकमात्र रणनीति थी । बीजापुर (जो कि उत्तर में अहमदनगर, पूर्व में बीदर तथा दक्षिण में विजयनगर और उसके उत्तराधिकारी **नायक** राज्यों से घिरा हुआ था) में कृष्णा-तुंगभद्रा दोआब के उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों को प्राप्त करने की

DECCAN AND SOUTH INDIA
16th Century
Narbada R.
KHANDESH
Burhanpur
Ellichpur
Wardha R.
BERAR
Painganga R.
Daulatabad
AHMADNAGAR
Godavari R.
Ahmadnagar
Chaul
Ravdanda
Bhima R.
Kalyani
Manjra R.
Naldrug
Bidar
GOLCONDA
Dabhol
BIDAR
Golconda
Gulbarga
Bijapur
Krishna R.
BIJAPUR
Raichur
Mudgal
GOA
Tungabhadra R.
Vijayanagar
Pennar R.
Bhatkal
Ikkeri
Penukonda
Madras
Cannanore
Mysore
Gingee
BAY OF
BENGAL
Calicut
Cauvery R.
ARABIAN
SEA
Tanjore
Cochin
Madurai

KERALA
C.1500
KASARAGOD
KOLATHIRI
PANTALAYANI
KOLLAM
CALICUT
(KOZHIKKODU)
ZAMORIN'S
TERRITORIES
COCHIN
VADAKKUMKUR
THEKKUMKUR
KARAPPURAM
PURAKKAD
ODANAD
KAYANKULAM
MARTA
DESHINGANAD
(QUILON)
QUILON
TRAVANCORE
(VENAD)

लालसा थी। जिससे दक्षिण भारतीय राज्यों तथा बीदर एवं गोलकुंडा के हितों पर सीधी चोट पहुंची। पुनः शोलापुर एवं नालदुर्ग में बीजापुर के हित ही अहमदनगर के साथ हुए टकराव के पीछे प्रमुख कारक थे। गोलकुंडा के लिए (जो कि उत्तर में बरार, पश्चिम में बीदर तथा दक्षिण में विजयनगर एवं उसके उत्तराधिकारी नायक राज्यों से घिरा हुआ था) बीदर एवं बरार का अस्तित्व गोलकुंडा एवं बीजापुर तथा अहमदनगर एवं गोलकुंडा के बीच प्रतिरोधक के तौर पर काम करने के लिए काफी महत्व रखता था। गोलकुंडा ने मुदगल एवं रायचूर दोआब में अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिए अहमदनगर से सहायता लेना बेहतर समझा। दूसरी तरफ नालदुर्ग, शोलापुर तथा गुलबर्ग पर बीजापुर की आक्रामक योजनाओं के खिलाफ अहमदनगर को भी गोलकुंडा की मदद की जरूरत थी। बरार लगातार पश्चिम में अहमदनगर के साथ तथा दक्षिण में गोलकुंडा के साथ टकराव में उलझा रहा। गठबंधन करने के लिए केवल बीजापुर राज्य ही शेष बचा था इसलिए 16वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बीजापुर-बरार गठबंधन अधिक समय तक कायम रहा किन्तु शताब्दी के उत्तरार्द्ध में धीरे-धीरे परिस्थिति बदल गई। इसकी वजह यह थी कि बीजापुर के हित गोलकुंडा तथा विजयनगर के विरुद्ध टकराव की स्थिति में अहमदनगर तथा बीदर का समर्थन जुटाने पर अधिक जोर देते थे। 1574 में बरार पर कब्जा करने में बीजापुर ने मुर्तज़ा निज़ाम शाह की मदद की। 1619 में बीजापुर ने बीदर पर कब्जा कर लिया। हालांकि मुगलों के उदय के साथ ही दक्खन के परिदृश्य में जबरदस्त बदलाव आ गया। मुगलों ने 1595 में अहमदनगर पर आक्रमण किया इस आक्रमण ने दक्खनी राज्यों को नये समझौते तथा संतुलन हासिल करने के लिए विवश किया (विस्तृत जानकारी के लिए इकाई 9 देखें)।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए:

कोंकण ....

....

मालाबार ....

....

कोरोमण्डल ....

....

2) निम्नलिखित का मिलान कीजिए:

क	ख
1. बीजापुर	क. निजाम शाही
2. गोलकुंडा	ख. बरीद शाही
3. बरार	ग. आदिल शाही
4. बीदर	घ. इमाद शाही
5. अहमदनगर	ङ. कुतुब शाही

3) सही/गलत वक्तव्यों पर (✓ या ×) के निशान लगाइये:

i) निज़ाम शाही शासक रायचूर दोआब पर कब्जा करना चाहते थे।

ii) अफाकी-दक्खनी कारक द्वारा दक्खन में उत्तर-बहमनी राजनीति में शायद ही कोई उल्लेखनीय भूमिका निभाई गई हो।

iii) 1550 के बाद बीजापुर के बरार के साथ संबंधों में परिवर्तन आया।

iv) गोलकुंडा मुदगल तथा शोलापुर पर कब्जा करना चाहता था।

3.4 दक्षिण भारत में राजनैतिक संरचनाएँ

1500 ई० तक मालाबार (दक्षिण-पश्चिमी तट) तथा तिरूनेलवेली को छोड़कर शेष समूचे दक्षिणी भारत को विजयनगर साम्राज्य का हिस्सा बना लिया गया। बाद में, तिरूनेलवेली को भी (1540 में) विजयनगर

साम्राज्य ने हथिया लिया। हमारे अध्ययन के तहत आने वाले काल के प्रारंभ में मालाबार क्षेत्र में चार स्वतंत्र राज्य मौजूद थे : "कोलाथिरियों द्वारा शासित कोलाथुनाड (कैन्नानोर)", समुद्री राजाओं द्वारा शासित कोज़ीकोड (कालीकट), तिरूवेदियों के आधिपत्य के तहत वेनाड तथा उभरता हुआ कोचीन राज्य। 16वीं शताब्दी के दौरान, विजयनगर साम्राज्य के भीतर इक्केरी, सेन्जी (जिन्जी), ओडेयार मैसूर, मदुरई तथा तन्जौर के **नायक** राज्यों का उदय हुआ जो केवल नाममात्र के लिए विजयनगर के अधिनस्थ बने रहे।

कृष्ण देव राय तथा उसके अधिकारियों के मातहत दक्षिण भारत में राजनैतिक संरचनाओं के बारे में पाठ्यक्रम ई.एच.आई.-03 की इकाई 27 में विचार किया गया है। यहां हम **नायक** राज्यों तथा मालाबार राज्यों पर जोर देगें।

3.4.1 नायक राज्यों का उदय

आप यह जानना चाहेंगे कि **नायक** राज्यों की उत्पत्ति कब हुई? कुछ इतिहासकारों (नीलकंठ शास्त्री आदि) का मानना है कि विजयनगर की पराजय (1565 में) ने विद्रोहों को जन्म दिया। इसने **"पलायगरों की निरंकुशता"** में भी बढ़ोत्तरी की जिसके परिणामस्वरूप मदुरा, तंजौर तथा सेन्जी के **नायकों** ने स्वतंत्रता प्राप्त की। किन्तु अन्य इतिहासकारों (बर्टन स्टीन आदि) के अनुसार **नायकों** के उदय को 1530 से खोजा जा सकता है। इस विवाद में और अधिक जाए बिना हम यहां पर प्रत्येक **नायक** राज्य के विकास का संक्षिप्त विवरण करेंगे।

सेन्जी

सेन्जी का राज्य (पूर्वी तट के किनारे उत्तर में पालार से लेकर दक्षिण में कोलेरून तक) नायक शासकों के अधीन कृष्ण देव राय के शासन काल के दौरान शुरू हुआ प्रतीत होता है। वैअप्पा (1526-1544) इसका प्रथम **नायक** था। 1592 तक सेन्जी के सभी **नायक** विजयनगर के प्रति वफादार बने रहे। हालांकि, विजयनगर के शासक वेंकट प्रथम ने **नायकों** पर विजयनगर के प्रभाव को मजबूत बनाने के इरादे से 1592 के बाद अपनी राजधानी पेनुकोंडा से बदलकर चन्द्रगिरी में स्थापित की। इससे **नायकों** में आक्रोश व्याप्त हो गया क्योंकि इससे उन्हें अपने अंदरूनी मामलों में विजयनगर की दखलंदाज़ी का अंदेशा हुआ। (नायकों द्वारा बार-बार विजयनगर को अदा किए जाने वाले नजराने के प्रति उपेक्षाभाव प्रकट करने का मुख्य कारण भी यही था, जिसने अंततः 1614 में वैंकट प्रथम की मृत्यु के बाद गृहयुद्ध का रास्ता तैयार किया।) इस तरह की दखलंदाजी का एक उदाहरण वैलोर का **नायक** था, जो कि सेन्जी के **नायकों** के अधीन कार्यरत था, वैंकट प्रथम द्वारा उसे प्रोत्साहित किया गया कि वह सेन्जी के **नायकों** की सत्ता को अस्वीकार कर दे। वैंकट प्रथम ने साम्राज्य के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के **नायकों** को कमज़ोर बनाने के लिए "फूट डालो और राज करो" की नीति का अनुसरण किया। इस सब के कारण वैलोर तथा सेन्जी के **नायकों** ने विद्रोह किया (1600 के कुछ समय बाद) बाद में (1604-1608) वैंकट प्रथम ने वैलोर तथा सेन्जी पर कब्जा कर लिया।

तंजौर

नायकों के अधीन तंजौर (आधुनिक तंजौर तथा उत्तरी अरकॉट) का उदय 1532 में अच्युतराय के शासन काल के दौरान सेवप्पा नायक के अधीन हुआ। तंजौर के **नायक** समूची 16वीं शताब्दी के दौरान विजयनगर शासकों के प्रति वफादार बने रहे। उन्होंने हमेशा लड़ाइयों में विजयनगर साम्राज्य का साथ दिया। उदाहरण के लिए, गोलकुंडा पर आक्रमण के समय उन्होंने वैंकट प्रथम की सहायता की और यह वफादारी 1614 मे वैंकट प्रथम की मृत्यु के समय तक जारी रही।

मदुरा

मदुरा (कावेरी के दक्षिण में) को कृष्ण देव राय के शासनकाल के आखिरी वर्षों के दौरान (1529) **नायक** के नियंत्रण में लाया गया। पहला **नायक** विश्वनाथ (मृत्यु 1564) था। आम तौर पर वह और उसके उत्तराधिकारी विजयनगर के प्रति वफादार बने रहे, यहां तक कि तालीकोटा की लड़ाई के समय भी उन्होंने विजयनगर शासक का साथ दिया। उन्होंने पुर्तगालियों के खिलाफ भी साम्राज्य की मदद की। किन्तु **1580 के दशक के आरंभ में, वैंकट प्रथम तथा वीरप्पा नायक के बीच तनाव उत्पन्न हो गया। शायद वीरप्पा नायक ने उस नज़राने की उपेक्षा करने का प्रयास किया जिसे वैंकट ने अपनी सेना भेजकर राजस्व**

देने के लिये मज़बूर किया। पुनः मुटट् कृष्णप्पा नायक ने 1605 के आसपास नज़राना अदा नहीं किया तो वैंकट प्रथम को एक बार फिर अपनी सेनाएं भेजनी पड़ी। इससे यह प्रदर्शित होता है कि अपने शासन-काल के अंतिम वर्षों के दौरान, जब वैंकट प्रथम ने अधिक से अधिक केन्द्रीकरण थोपा तो नायकों ने उसकी सत्ता को चुनौती देने का प्रयत्न किया।

इक्केरी

इक्केरी (उत्तरी कर्नाटक) के **नायकों** का उदय भी कृष्ण देव राय के शासनकाल में ही हुआ। पहला **नायक** केलाडी नायक चौडप्पा था जिसने अच्युतराय तथा रामराय की सेवा की थी। चौडप्पा के बेटे व उत्तराधिकारी, सदाशिव नायक (1540-65) **ने** रामराय के हाथों बीजापुर की पराजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और इसके पुरस्कार के रूप में बाद में उसे रामराय द्वारा "राय" की उपाधि से सम्मानित किया गया। इक्केरी के तुलू नायक 16वीं शताब्दी के शुरू से अंत तक विजयनगर के वफादार बने रहे किन्तु 17वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में वे वैंकटप्पा नायक प्रथम (1586-1629) के समय खास तौर पर स्वतंत्र हो गये। इक्केरी के **नायकों** को हमेशा बीजापुर के भारी दबाव का सामना करना पड़ा किन्तु वे उसके हमलों को नाकाम करने में सक्षम रहे। इसके अलावा उन्हें मैसूर के ओडियार **नायकों** की शत्रुता का भी सामना करना पड़ा। इक्केरी के नायक गरसोप्पा को भी लालच की दृष्टि से देखते थे, जो कि उत्तरी कैनारा में कालीमिर्च की खेती के लिए सबसे अधिक समृद्ध भूमि थी। इसकी वजह से गरसोप्पा की रानी भैरवदेवी को कमजोर बनाने के लिए नियमित अभियान चलाये गये।

ओडियार मैसूर

ओडियार **नायकों** का इतिहास 1399 तक के सुदूर अतीत तक जाता है जबकि वे इस क्षेत्र में आकर बस गये थे। किन्तु चामराजा तृतीय (1513-53) तथा उसके पुत्र तिम्मराजा (1553-72) के अधीनस्थ ही ओडियारों को प्रमुखता हासिल हुई। इस क्षेत्र पर (खासतौर से उम्मेटूर पर) कभी भी विजयनगर का संपूर्ण नियंत्रण नहीं रह सका। हम यह पाते हैं कि विजयनगर के सबसे शक्तिशाली शासक कृष्ण देव राय के लिए **भी उम्मेटूर के इन मुखियाओं को दबा पाना कठिन रहा। ओडियार नायकों ने विजयनगर की सत्ता का** उल्लंघन करना जारी रखा अंततः श्रीरंगपट्टम में विजयनगर के प्रतिनीधि को हटाकर 1610 में **ओडियार राजा को अंतिम सफलता प्राप्त हुई तथा उसने श्रीरंगपट्टम को अपनी राजधानी बनाया।**

3.4.2 मालाबार में स्थित राज्य

15वीं शताब्दी तक आते-आते मालाबार में तीन प्रमुख राज्य विद्यमान थे: (i) कोलाथुनाड अथवा कैन्नानूर (कालीकट के उत्तर में नेत्रावती नदी से लेकर दक्षिण में कोरापुज्हा तक; कोलाथिरियों द्वारा शासित), (ii) कोजीकोड अथवा कालीकट (उत्तर में कोलाथिरी राज्य तथा दक्षिण में ज़मोरिन द्वारा शासित तिरूवदी राज्य के बीच), (iii) वेनाड अथवा ट्रावनकोर (उत्तर में क्वीलोन से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक), (iv) इसके अलावा कोचीन एक उदीयमान राज्य था। 16वीं शताब्दी की मालाबार की राज्य व्यवस्था का प्रमुख लक्षण, कोलाथुनाड तथा कोज़ीकोड के बीच तथा साथ ही कोज़ीकोड तथा कोचीन के (नायर) राजाओं के बीच चलने वाला चिरस्थाई युद्ध था। कोलाथुनाड तथा कोचीन (क्षत्रीय) राजाओं द्वारा एक दूसरे से श्रेष्ठ वंशावलियों के दावे किए जा रहे थे। इन चार प्रमुख शासकों के अलावा, तानुर, क्रैन्गानौर, मंगत, इडापल्ली, वेडाक्कुमकुर, प्रोकॉड, कयामकुलम तथा क्वीलोन में अनेक छोटे स्वायत्त शासक/राजा मौजूद थे। क्रैन्गानौर, इडापल्ली तथा वेडाक्कुमकुर के राजा कालीकट के अधीनस्थ थे। इडापल्ली कालीकट के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि यह कोचीन के विरुद्ध उसकी कार्यवाहियों के लिए आधार उपलब्ध कराता था। दिलचस्प बात यह है कि केरल की सामाजिक-राजनैतिक संरचना कुछ इस तरह की थी कि अक्सर राजाओं को एक दूसरे के राज्य क्षेत्र में कुछ अधिकार एवं संपत्तियां हासिल रहती थीं। इस तरह मालाबार की राजनैतिक संरचना में, अतिरिक्त प्रादेशिक दावे किए जाने की काफी गुंजाइश मौजूद थी। उदाहरण के लिए, कालीकट को कोचीन और ट्रावनकोट के मंदिरों पर अनेक अधिकार प्राप्त थे। इसी तरह ऐसे अनेक राजा थे जो कि कालीकट के अधीनस्थ नहीं थे किंतु ज़मोरिन के राजा के क्षेत्र के तहत आने वाले अनेक मंदिरों पर वे अपने प्राधिकार का इस्तेमाल करते थे। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक रहेगा कि 16वीं शताब्दी के दौरान, क़ालीकट को अन्य मालाबार राज्यों पर कुछ विशिष्ट लाभ हासिल थे—यह पश्चिमी व्यापार का बड़ा केन्द्र था, इसके पास शक्तिशाली नौ सेना थी और इसे अरब के सौदागरों का समर्थन हासिल था, जो कि हथियार एवं घोड़े प्रदान करते थे।

16वीं शताब्दी का मालाबार का इतिहास भारत में पुर्तगालियों के आरंभिक इतिहास का समकालीन है। (मालाबार में पुर्तगाली शासन की स्थापना के लिए इकाई-04 **देखिए**।) कालीकट के अरब सौदागर शुरू से ही पुर्तगालियों के मंसूबों के बारे में सशंकित थे। ज़मोरियों ने यूरोपीय शक्तियों के खिलाफ उनका समर्थन किया। दूसरी तरफ कैन्नानूर तथा कोचीन के साथ कालीकट की शत्रुता ने उन्हें पुर्तगालियों से मित्रता करने के लिए विवश कर दिया। उस समय के कोचीन के राजा के गद्दी पर बैठते समय ही उसका तख्ता पलट देने के लिए हर हथकंडा इस्तेमाल किया गया। इसके अलावा उन्होंने कोचीन को अपना सारा माल कालीकट के माध्यम से बेचने के लिए मजबूर किया। ऐसा उसने कालीकट से बदला लेने के लिए किया था। हालांकि कोचीन के शासक ने यूरोपियों को कोचीन में एक कारखाना लगाने की इज़ाज़त दी। इससे पुर्तगालियों ने अपने लाभ के लिए परिस्थिति का भरपूर इस्तेमाल किया। उन्होंने महसूस किया कि मालाबार तट पर व्यापार नियंत्रण करने में मुख्य रूकावट कालीकट ही है। अतः 16वीं शताब्दी के दौरान पुर्तगालियों ने कालीकट के खिलाफ हथियारबंद टकराव जारी रखे। पुर्तगालियों को खदेड़ देने के इरादे से, ज़मोरिन ने कई बार बीजापुर, गुजरात, अहमदनगर तथा मिस्त्र के साथ संयुक्त मोर्चा बनाया। हालांकि इन प्रयासों में उसे कोई सफलता नहीं मिल सकी। कुछ भी हो, ज़मोरिन भूक्षेत्रों पर पुर्तगालियों के लिए समस्या बने रहे। यहां तक कि समुद्र पर भी पुर्तगालियों के लिए कालीकट की नौ सेना को ध्वस्त करना कठिन हो गया। कालीकट की यह नौ सेना विशेषज्ञों के सुविख्यात मरक्कार परिवार के नेतृत्व में संगठित थी। 1528 से 1598 तक पुर्तगालियों और ज़मोरिन के बीच का टकराव मुख्यतः समुद्र तक सीमित रहा। अंततः 1599 में पुर्तगाली मरक्कारों के खिलाफ जीत हासिल करने में सफल हो सके।

पुर्तगालियों का नियंत्रण केवल उन स्थानों पर ही प्रभावी था, जहां उन्होंने अपने किलों का निर्माण कर लिया था – कैन्नानोर, कोचीन, प्रौकॉड तथा क्वीलोन। किंतु पुर्तगालियों की स्वेच्छाचारिता और बर्बरता ने उनके इन मित्रों को, कालीकट के साथ अपनी परंपरागत शत्रुता के बावजूद, उनसे नाता तोड़ लेने पर विवश कर दिया। उदाहरण के लिए, कैन्नानोर के शासकों ने, जिन्होंने आरंभिक वर्षों में कालीकट के विरुद्ध पुर्तगालियों का समर्थन किया था, बाद में 1558-60 में पुर्तगालियों के विरुद्ध ज़मोरिन का पक्ष लिया। इसी तरह, तानूर का राजा, जो ईसाई बन गया था तथा उसने कालीकट के खिलाफ पुर्तगालियों का समर्थन क़िया था, उसने भी पुर्तगालियों से मुंह मोड़ लिया। दरसअल केवल कोचीन, प्रोकॉड तथा क्वीलोन ही थे जिनके साथ पुर्तगाली एक स्थाई मैत्री कायम रख पाने में सफल रहे।

बोध प्रश्न 2

1) मालाबार के राज्यों के नाम बताइये।

....

....

....

....

2) **नायक** राज्यों का उदय कब हुआ?

....

....

....

....

3) 16वीं शताब्दी के दौरान **नायक**-विजयनगर सबंधों की प्रकृति की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

4) जमोरिन कौन थे? पुर्तगालियों के साथ उनके संबंधों की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3.5 राज्य-व्यवस्था की प्रकृति : विभिन्न दृष्टिकोण

दक्खनी राज्यों की राजनैतिक संरचनाओं की प्रकृति दक्षिण भारत की राजनैतिक संरचनाओं की प्रकृति से थोड़ी भिन्न थी। हाल ही में संजय सुब्रहमण्यम द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार पेन्नार के उत्तर एवं दक्षिण में स्थित राज्यों, अर्थात दक्खन तथा विजयनगर एवं उत्तराधिकारी **नायक** राज्यों के बीच मामूली अंतर ही विद्यमान था। इतिहासकार संजय सुब्रहमण्यम ऐसा इसलिए मानते हैं क्योंकि सभी जगहों पर नज़राना देने वाले मुखियाओं (**नायकों** एवं **पलाईयाक्करारों** आदि) की उपस्थिति तथा ठेके पर राजस्व वसूलने की प्रथा की मौजूदगी आदि देखने को मिलती है।

दक्खनी राज्यों ने अपने पूर्वजों अर्थात बहमनियों की प्रणाली का व्यापक तौर पर अनुसरण किया था। इसीलिए तुर्की-ईरानी तत्वों का वर्चस्व था। इसने स्थापित हुए नये राज्यों को एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान की। इतिहासकार एम. ए. नईम बीजापुर राज्य को "सामंती" मानते हैं। उनके अनुसार यह व्यवस्था "सांविदागत (contractual) संबंधों" पर आधारित थी, अर्थात, संरक्षण के बदले में कुलीनों ने शासकों के प्रति राज्य निष्ठा तथा सेवाएं देने का वायदा किया था। किंतु सभी दक्खनी राज्य "केन्द्रीकृत राजतंत्र" थे जिनमें सुल्तान की शक्तियां लगभग संपूर्ण थीं। इसके अलावा परिधि एवं केन्द्र के बीच एक वित्तीय संपर्क कायम था। यहां विजयनगर शासन के विपरीत साँझा प्रभुसत्ता की कोई धारणा मौजूद नहीं थी। दक्खनी शासकों के अधीन वेलमा, रेड्डी अथवा मराठा सरदारों को कोई भी शक्तियां प्राप्त क्यों न रही हों, वे प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय नियंत्रण के अधीन थे। हालांकि, दक्खनी राज्यों ने जब दक्षिण में और आगे विस्तार करना शुरू किया तो वे केवल नज़राने से ही संतुष्ट रहने लगे क्योंकि व्यावहारिक तौर पर दूर-दराज़ के इन क्षेत्रों पर सीधे शासन कर पाना उनके लिए कठिन था। जे. एफ. रिचर्ड ने गोलकुंडा को एक 'विजय से प्राप्त राज्य' (conquest state) के रूप में परिभाषित किया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि 16वीं शताब्दी की दक्खन राज्य व्यवस्थाएं निरंतर चलते रहने वाले युद्धों की विशेषता लिए हुए है (इकाई 9 देखिए) फिर भी हम विजयनगर की तरह उनकी व्याख्या विजय से प्राप्त राज्यों के रूप में नहीं कर सकते।

विजयनगर के विस्तार की प्रकृति दक्खनी राज्यों के विस्तार की प्रकृति से पूरी तरह भिन्न है : विजयनगर में "तेलुगु नायक" विस्तार का साधन बने जबकि दक्खनी राज्यों में राजतंत्र अथवा केन्द्रीकृत राज्य प्रत्यक्ष रूप से विस्तार की प्रक्रिया में शामिल हुआ था। जहाँ तक दक्षिण भारतीय राज्यों की प्रकृति का संबंध है कुछ इतिहासकारों ने विजयनगर राज्य को "सामंती" कहा है, कुछ ने इसे "युद्ध राज्य" कहा है, अन्य ने इसके "विभाजित" चरित्र को उजागर किया है। पाठ्यक्रम ई.एच.आई.-03 के खंड 3 तथा 7 में हम इस पर पहले ही विस्तृत चर्चा कर चुके है। "सामंती" नमूने में सरदारों से अपने से उच्चतर शासकों को सैन्य सेवाएं प्रदान करने की आशा की जाती थी। किंतु वे अपने प्रादेशिक क्षेत्रों का प्रशासन चलाने के लिए स्वतंत्र थे। "विभाजित" राज्य में परिसरीय सरदारों ने केन्द्र की औपचारिक प्रभुसत्ता को मान्यता दे दी थी, किन्तु कृषि की अतिरिक्त पैदावार विभाजित हिस्सों से केन्द्र की ओर प्रवाहित नहीं होती थी। हालांकि संजय सुब्रहमण्यम इंस बात पर जोर देते हैं कि (यहां तक कि 17वीं शताब्दी तक भी) मदुरई, सेन्जी तथा तजांवुर संभागों से अच्छा खासा राजस्व प्रवाह होता रहा। वैसे भी 16वीं शताब्दी के दौरान "विभाजित" चरित्र धीरे-धीरे केन्द्रीकरण की दिशा में बदल गया था। बर्टन स्टीन के अनुसार, जो कि "विभाजित" राज्य के सिद्धांत के प्रमुख प्रतिपादक हैं, केन्द्रीकरण की यह प्रक्रिया कृष्ण देव राय के शासन काल के समय ही शुरू हो गई थी। यह परिवर्तन, मुख्यतः कर्नाटक (उम्मेटूर) तथा तमिल सरदारों में व्याप्त व्यापक असंतोष के कारण हुए जिसके फलस्वरूप कृष्ण देव राय को और अधिक व्यापक रणनीतियों पर विचार करना पड़ा।

इनके अंतर्गत सेना पर राजसी नियंत्रण किलों में विश्वासपात्र ब्राह्मण सेनानायकों की नियुक्ति तथा स्थानीय सेना (**पॉलीगारों**) की भर्ती जंगल में रहने वाले आदिवासियों में से करना, आदि शामिल थी। हम यह देख चुके हैं कि वैंकट प्रथम ने किस तरह से, खासकर पेनुकोंडा से चन्द्रगिरी में अपनी राजधानी के स्थानातंरण के बाद, **नायकों** की बढ़ती शक्ति पर दृढ़ नियंत्रण कायम करने का प्रयास किया था। किन्तु उसका परिणाम 17वीं शताब्दी के शुरू में **नायकों** के विद्रोह के रूप में सामने आया। फिर भी हम देखते हैं कि 16वीं शताब्दी के दौरान जो प्रक्रिया शुरू हुई थी वह अठारवीं शताब्दी के दौरान हैदरअली और टीपू सुल्तान के अधीन मैसूर में एक मजबूत और केन्द्रीकृत राज्य के निर्माण के साथ पूरी हुई।

मालाबार के राज्य "सामंती" आधारों पर अधिक संगठित थे। नायर सरदारों को अपने प्रादेशिक क्षेत्रों में स्वायत्त शक्तियां हासिल थीं जिनके बदले में वे अपने राज्य प्रमुख को अनिवार्य सैन्य सेवाएं प्रदान करते थे। हालांकि ये "सामंती" सरदार आनुवांशिक तौर पर भूमि के स्वामी थे।

16वीं शताब्दी के दौरान, खासतौर से रामराय के शासनकाल के समय से, दक्षिण भारत की राज्य व्यवस्था में एक अन्य लक्षण विकसित हुआ, जिसे बर्टन स्टीन "आनुवांशिकतावाद" के उदय के रूप में व्याख्यायित करते हैं। रामराय ने किलों के ब्राह्मण सेनानायकों (जिनकी अपने अधिराजों के साथ कोई स्वकुटुंबी नातेदारी नहीं थी) को हटाकर अपने कुटुम्बीजनों की नियुक्त कर दिया और तेलुगु सरदारों को और अधिक स्वायत्तता प्रदान कर दी (खासतौर से कर्नाटक-आंध्र क्षेत्र में)। यहां तक कि उसने अपने दोनों भाइयों तिरूमल और वैंकटाद्रि को सेना का प्रभारी बना दिया। इस तरह "अनुवांशिक" राज्य व्यवस्था की शुरुआत हुई। आगे यह और अधिक परिष्कृत हुई। **नायकों** ने अपनी शक्तियों एवं प्रभावों का "अनुवांशिकता" के आधार पर विस्तार करने की चेष्टा की – खास तौर पर मारावार के सरदारों ने, जो आगे चलकर 17वीं शताब्दी मे रमनाद में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना करने में सफल रहे, और पुदूदूकोट्टई (रायलसीमा) में कल्लार के सरदारों ने अपने कुटुम्ब/जाति संबंधों के जरिए, मारावार के सरदारों ने रामेश्वरम, मदुरई तथा रमनद (उनकी मातृभूमि) तक अपने प्रभाव का विस्तार कर लिया। कल्लार सरदारों ने अपने स्वकुटुम्बी रिश्तों के माध्यम से लगभग समूचे पुदूदूकोट्टई पर अपनी सत्ता का विस्तार कर लिया। वे कल्लार तोन्डइमन राजा द्वारा जारी किए गए वारंटों (**पट्टों**) के रूप में जमीन हासिल करते थे। इसी तरह, लापाक्शी **नायकों** ने लापाक्शी के आसपास 'अनुवांशिकता' का निर्माण करने का प्रयास किया। वीरप्पन्यगा नायक ने पैनुकोंडा राज्य का नियंत्रण संभाला जबकि उसके अन्य दो भाइयों ने चित्रदुर्ग (अच्युतदेव राय के अधीन) के किलों में पद संभाल लिए। इन **नायकों** ने उन्हीं रिवाज़ों व प्रचलनों का पालन करना जारी रखा जिनका पालन विजयनगर के राजाओं द्वारा किया जाता था। मदुरई के **नायकों** ने राज्याभिषेक की उन्हीं औपचारिकताओं का अनुसरण किया जिनका कृष्ण देव राय द्वारा पालन किया जाता था। मदुरई के नायक विश्वनाथ ने अपने स्वकुटम्बीजनों तथा निकट सहयोगियों के साथ कुटुम्ब भोज की राजसी-प्रथा भी शुरू की। मदुरई के **नायकों** ने तो सरदारों को किलों के साथ संबद्ध करने और इस तरह समूचे राज्य के साथ संबद्ध करने की पुरानी काकतीय प्रथा को दोबारा से शुरू किया। विश्वनाथ नायक ने पलाईक्कारार के मातहत "सैन्य शिविरों" की प्रणाली शुरू की – प्रत्येक पलाईक्कारार किसी न किसी किले का संरक्षक था और इस तरह वे मदुरई के शासक प्रतिष्ठित वर्ग (**कुमारावरूक्कम**) के सदस्य बन गए।

3.6 प्रतिष्ठित शासक वर्ग

16वीं शताब्दी के दक्खन और दक्षिण भारतीय शासक वर्गों को अपने प्रभाव क्षेत्रों में करीब-करीब पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त थी। इस तथ्य के बावजूद कि कुलीनता का चरित्र अपने आप में सभी जगह एक समान ही था, परन्तु जहां तक गठन एवं शक्तियों का प्रश्न है, उनके बीच कुछ भिन्नताएं भी मौजूद थीं।

दक्खन

अहमदनगर एवं बीजापुर कुलीनों का गठन काफी कुछ समान था किंतु गोलकुंडा के कुलीनों की प्रकृति भिन्न थी।

16वीं शताब्दी के गोलकुंडा के निवासियों में अधिकतर मुख्यतः तेलुगुभाषी हिन्दू थे। किंतु कुलीन एवं प्रभुसत्ता संपन्न लोग मुसलमान थे। इसके अलावा, जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं, गतिविधि का केन्द्र

सिंचित उपजाऊ इलाके (राजमुंदरी) से हटकर भीतरी तेलंगाना के कम उपजाऊ शुष्क क्षेत्रों में पहुंच गया था, जिसने जलाशयों से सिंचाई पर आधारित सूखी खेती का उपयोग किए जाने का मार्ग प्रशस्त किया। इससे बहमनी काल के बाद तेलुगु रेड्डी तथा वेलमा **नायक** किसानों की संख्या बढ़ती गई। कुतुब शाही शासकों के सामने यह समस्या थी कि इस शक्तिशाली स्थानीय प्रतिष्ठित वर्ग का प्रतिकार किस तरह से किया जाए। इन तेलुगु **नायकों** को अपने सजातीय बंधुओं अर्थात, विजयनगर के शासकों से लगातार समर्थन मिलता रहता था। (इस समस्या का पूरी तरह से निराकरण 1565 में तालीकोटा की लड़ाई में विजयनगर के शासक की पराजय के बाद ही हो सका।)

हालांकि, इब्राहिम कुतुब शाह (1530-80) की तमिल संस्कृति को संरक्षण देने की चालाक नीति ने उसे एक **मुस्लिम शासक** के बजाए एक देशी शासक के रूप में अधिक पेश किया। वह तेलुगु जानता था और उसकी एक तेलुगु पत्नी थी। इसके अलावा उसने ब्राह्मणों व उलेमाओं, दोनों को ही, राजस्व मुक्त अनुदान दिये। बीजापुर शासकों के विपरीत, उसने **जज़िया** आरोपित नहीं किया। इसका परिणाम यह हुआ कि जब 1542-65 के बीच अलिया राम राय के नेतृत्व में विजयनगर की सत्ता द्वारा गोलकुंडा के शासकों के सामने खतरा उपस्थित हुआ तो उसके तेलुगु **नायक** वफादार बने रहे जबकि स्वयं उसके तुंगभद्रा दोआब के कुटुम्बीजनों ने विजयनगर के शासकों का साथ दिया। हालांकि, इन तेलुगु **नायकों** को अपने दक्षिण भारतीय साथियों की तुलना में कम स्वायत्तता प्राप्त थी। हम उन्हें कुछ हद तक मुस्लिम नियंत्रण के अधीन रखा हुआ पाते हैं। सामरिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण स्थान मुस्लिम सेनानायकों के अधीन थे। किंतु समूचे दक्खन और दक्षिण भारत के राजस्व कार्यालयों में करीब-करीब ब्राह्मणों का ही वर्चस्व था। अन्य दक्खनी राज्यों में कुलीन वर्ग पूर्णतया मुस्लिम कुलीनों में से लिये जाते थे।

इन मुस्लिम कुलीनों को सैन्य बलों का एक निर्धारित कोटा रखना पड़ता था जिसके लिए उन्हें भू-आवंटन (**मोकासा**) प्राप्त होते थे। वे उस समय तक पद पर बने रह सकते थे जब तक उन्हें सुल्तान की कृपा प्राप्त रहती थी और वे उनके प्रति वफादार बने रहें। उनकी कृषि भूमि का भी हस्तांतरण किया जा सकता था किन्तु यह कभी-कभार ही होता था। उन्हें अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र छोड़ दिया जाता था जहां उन्हें लगभग पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त थी। जब बीजापुर के शासकों ने दक्षिण में और आगे विस्तार करना शुरू किया तो उन्हें क्षेत्र का प्रत्यक्ष तौर पर शासन करना कठिन लगा। इसके परिणामस्वरूप सुल्तानों ने "सह शासित राज्यों" की नीति अपनाई और स्वयं को वार्षिक नजराने से ही संतुष्ट करने लगे।

दक्षिण भारत

नायक दक्षिण भारत के शासक कुलीन थे। **नायकों** तथा उनको मिली सुविधाओं व उनके कर्तव्यों के बारे में ई.एच.आई.-03 पाठ्यक्रम की इकाई 27 में, विस्तार से चर्चा की गई है। यहां हमारा मुख्य ध्यान 16वीं शताब्दी की कृषीय व्यवस्था पर है, जबकि **पलाईक्कारार** खेतिहर अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करते थे। नायकों के उनके अधीनस्थ **पलाईक्कारारों** तथा **पॉलीगारों** के सम्बन्धों, विशेषकर 1565 ई० के बाद, की भी चर्चा करेंगे। जहां तक **पलाईक्कारारों** के गठन का प्रश्न है, इसके अंतर्गत तेलुगु, कन्नड़, कलाडी, कल्लार, मोरासू वोक्कालिग, तमिल, मुलबगल आदि, शामिल थे।

16वीं शताब्दी के दौरान, **पलाईक्कारारों** ने मंदिरों को ज़मीनें देकर तथा मंदिरों के संरक्षण के कार्यों का नियंत्रण अपने हाथ में लेकर तमिल किसान कुलीनों को हटा देने की कोशिश की। दूसरी तरफ, मंदिरों की जमीनों को अक्सर सैन्य सरदारों को हस्तांतरित किया गया। इस तरफ के भूमि हस्तांतरणों के कारण मंदिरों की अर्थव्यवस्था में गिरावट आई – खासतौर से रिकार्डों के रख-रखाव पर उनका एकाधिकार समाप्त हो गया। **नायकों** ने रिकार्डों के केन्द्रीयकरण का काम मराठों तथा कन्नड़ों की मदद से किया। इस प्रकार नायकों ने केन्द्रीकृत राज्य व्यवस्थाओं के उदय के लिए जरूरी पृष्ठभूमि तैयार की थी। निरंकुश राज्य की उत्पत्ति की दिशा में स्थानीय सत्ता के आधार का विनाश तथा मंदिरों की संस्थागत अर्थव्यवस्था में कमी किया जाना, शुरुआती कदम थे। हालांकि, कृषि आधारित सत्ता का सैन्य सरदारों के हाथों में हस्तातंरण पूरे तौर पर किसानों को नहीं हटा सका। उदाहरण के लिए, **कुडिनिंगदेवदना** में किसानों को जमीन की पैदावार में से एक स्थाई हिस्सा दिया जाता था और इस तरह उन्हें बेदखल नहीं किया जा सकता था।

सैन्य सरदारों ने बड़े पैमाने पर जमीन पुनः हथिया ली थी और उस पर नगरों का विकास किया जिन्हें **पलाईयम** कहा जाता था, इसके प्रमुख को **पलाईक्कारार** कहा जाता था। इन **पलाईयमों** पर उनका लगभग

पूर्ण नियंत्रण रहता था। वे किसानों, दस्तकारों तथा व्यापारियों पर विभिन्न कर आरोपित करते थे। इन सरदारों के शासन में करारोपण का बोझ बहुत अधिक था और इससे खासतौर से किसानों में अक्सर तनाव और असंतोष व्याप्त रहता था।

दूसरी तरफ, मदुरई में **नायकों** ने **पलाईक्कारारों / पॉलीगारों** (कनिष्ठ सैन्य सरदार) को शासक वर्ग में ले आने का प्रयास किया। उन्हें किलों/सैन्य शिविरों का प्रभारी बना दिया गया और वे शासक वर्ग के सदस्य बन गए और उन्हें **कुमारवरूक्कम** कहा जाने लगा। हालांकि अन्य **नायक** राज्यों में ऐसा नहीं था वहां सहयोग की अपेक्षा संघर्ष और टकराव का रिश्ता अधिक था। तंजावुर तथा सेन्जी में **पलाईक्कारार** नहीं होते थे, उनकी जगह पर ब्राह्मण एवं वेल्लला सरदारों का वर्चस्व था और उन पर समुचित सैन्य नियंत्रण भी नहीं था। इक्केरी तथा मैसूर के **नायकों** की लगातार अपने कनिष्ठ सरदारों से झड़पें होती रहती थीं। इक्केरी के **नायक** सदाशिव (1540-1565) द्वारा एण्डीग, मुप्पीना, वैलूर, माबासेल, कानेव तथा सीरवंती के **पॉलीगारों** के साथ सख्ती की गई थी। इसी तरह, वैंकटप्पा प्रथम के शासनकाल (1586-1629) के दौरान दानिवर, कुम्बेसी, यालावण्डूर, हैबी मंडगाडि, काराबुरा, मोराबादी, तथा सालानाडु के सरदारों ने बगावत की थी, हालांकि उन सभी को सफलता के साथ दबा दिया गया।

मालाबार के कुलीन लगभग समूचे तौर पर नायरों में से थे। वे नाम्बियार, कैमल, मेन्नाडिआर, कारतावू, तथा कुरूप कहलाते थे। वे स्थानीय सत्ता का नियंत्रण करते थे और इसके बदले में उनसे अनिवार्य सैनिक सेवा करने की अपेक्षा की जाती थी। उनके **कलारी** नामक स्वयं अपने सैनिक संगठन हुआ करते थे। कभी-कभी वे एक से अधिक राजाओं के साथ स्वामिभक्ति रखते थे। वे अपने नियंत्रण वाली भूमि पर निरंकुश सत्ता के स्वामी थे। दिलचस्प बात यह है कि मालाबार के कानून में किसी अनुवांशिक सरदार द्वारा विद्रोह किए जाने की स्थिति में शासक द्वारा उसे सत्ताच्युत कर देने अथवा उसकी संपत्ति जब्त कर लेने का शायद ही कोई प्रावधान था।

3.7 अर्थव्यवस्था

दक्खन तथा दक्षिण भारत की भू-राजस्व प्रणाली तथा कृषि संबंधों के विषय में हम इकाई 19 व 20 में विस्तार से चर्चा करेंगे। यहां हम इन पहलुओं पर बहुत संक्षेप में विचार करेंगे।

सभी दक्षिण भारतीय एवं दक्खनी राज्यों की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर आधारित थी। तटीय क्षेत्र वर्षा के पानी से भली भांति सिंचित थे और अन्य क्षेत्रों में, जलाशयों से सिंचाई की अच्छी तरह विकसित प्रणाली प्रचलित थी खासतौर से आंध्र क्षेत्र में। पश्चिम की तरफ नहरों से सिंचाई का भी महत्वपूर्ण स्थान था, खासतौर से अहमदनगर में।

काराशिमा, सुब्बरायलु एवं हाइट्ज़मेन के अनुसार किसान दक्षिण भारत में भूमि के स्वामी थे। किन्तु बर्टन स्टीन तथा संजय सुब्रहमण्यम ने इस संबंध में कुछ शंकाएं प्रकट की हैं। चूंकि किसानों/काश्तकारों को भूमि बेचने का अधिकार प्राप्त था, अतः इससे यही प्रदर्शित होता है कि भूमि के स्वामित्व की व्यवस्था मौजूद थी। किन्तु इस काल के दौरान "भूमि" पर स्वामित्व तथा "सुविधाओं (राजस्व अधिकारों) पर स्वामित्व के बीच भेद स्पष्ट किया गया था। वास्तव में संजय सुब्रहमण्यम् के अनुसार इस काल में किसानों को राजस्व अधिकारों पर स्वामित्व हासिल था (न कि भूमि पर)। सामुदायिक कृषि व्यवस्था विद्यमान थी। भू-कर राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत था। दक्षिण भारत में विजयनगर की पुरानी प्रणाली जारी रही। राजस्व की मांग 1/6 से 1/4 भाग तक रहा करती थी। हालांकि, गोलकुंडा में यह फसल का 1/2 भाग थी। राज्य राजस्व की नकद वसूली को प्राथमिकता देते थे। किन्तु मालाबार के राज्य अपवाद थे, यहां किसी तरह का भू-कर नहीं था। मालाबार के शासक सीमा-शुल्क की वसूलियों, **जनमन** स्वामित्व, इत्यादि पर अधिक निर्भर रहते थे। लेकिन कुछ इतिहासकार इस बात पर जोर देते हैं कि भू-कर विद्यमान था, हालांकि अधिकांश भूमि राजस्व से मुक्त थी क्योंकि यहं नम्बूदरी **ब्राह्मणों** के कब्जे में थी। चूंकि राज्य को भुगतान करने के मुकाबले मंदिरों को राजस्व का भुगतान कम करना पड़ता था, अतः किसानों ने मंदिरों के भुगतान को वरीयता दी।

मूलतः तीन प्रकार के भूमि वर्गीकरण मौजूद थेः (i) सम्राट की भूमि जिसे दक्षिण भारत में **भंडारवड़ा** के नाम से जाना जाता था, बीजापुर में **मुआमला** अथवा **क़लाह** तथा गोलकुंडा में **खालिसा** कह कर पुकारा जाता था (ii) कुलीनों, मातहतों आदि को प्रदान की गई भूमि, जो कि **आमरा** (दक्षिण भारत में) तथा **मोक़ासा** (दक्खन में) के नाम से जानी जाती थी। ये कुलीन शासक को निर्धारित राशि का वार्षिक भुगतान करते थे, (iii) राजस्व-मुक्त अनुदान जिसे **मान्या** (दक्षिण भारत में) तथा **इनाम** (दक्खन में) कहा जाता था। राजस्व की वसूली का प्रचलित स्वरूप राजस्व वसूली ठेके पर देना था, अर्थात् राजस्व की वसूली का अधिकार सबसे ऊंची बोली लगाने वालों को दिया जाता था, जो कि राज्य/कुलीनों को एक़ निर्धारित राशि का वार्षिक भुगतान करते थे और प्रायः उन्हें किसानों से अधिक से अधिक राजस्व वसूल करने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता था।

दक्खनी शासकों ने स्थानीय राजस्व वसूली तंत्र को कायम रखा। विभिन्न ओहदों के राजस्व अधिकारी भिन्न-भिन्न स्तरों पर कार्य करते थे। उदाहरण के लिए, सम्राट की भूमि का कर अधिकारी **हवलदार** कहलाता था, जबकि **परगना** स्तर पर **देसाई** तथा **देशमुख** होते थे। लेखाकारों को **देशकुलकर्णी** तथा **देशपाण्डे** के नाम से जाना जाता था। गांव के मुखिया, **मुकद्दम तथा पटेल कहलाते थे जबकि कुलकर्णी** ग्राम स्तर पर लेखाकार का कार्य करते थे। वे सभी राजस्व में से अपने काम के बदले में अपना हिस्सा प्राप्त करते थे जो कि विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न रहता था। तटीय क्षेत्र में पृथक गवर्नर (**सर-समातु**) नियुक्त किए गए जो राजस्व किसानों की ही तरह एक़ निर्धारित राशि का वार्षिक भुगतान करते थे। यद्यपि **आमिलों** की नियुक्ति अपने स्वामियों पर नजर रखने के लिए की गई थी फिर भी राज्य की रुचि किसानों के कल्याण से अधिक नियमित तौर पर भुगतान प्राप्त होते रहने में ही थी।

राज्य भू-कर के अलावा अन्य स्रोतों से भी राजस्व की वसूली करता था – नज़राने, युद्ध तथा लूटमार से प्राप्त धन और इन सबसे ऊपर सीमा शुल्क द्वारा। बीजापुर के शासक **जज़िया** के जरिये भी काफी आय प्राप्त करते थे। निजी तौर पर सिक्के ढालने हेतु लाइसेंस शुल्क भी आय का एक अच्छा साधन था। गोलकुंडा के शासकों ने हीरे की खानों से अच्छी खासी आय प्राप्त की। भू-राजस्व के अलावा अन्य करों की वसूली का अधिकार भी व्यापारी श्रेणियों का ही होता था जो वार्षिक तौर पर निर्धारित राशि का भुगतान करते थे और अपने निजी अधिकारियों (राजस्व वसूली आदि के लिए) को नियुक्त करते थे। अधिकांशतः वे तेलुगु व्यापारी जातियों से होते थे।

16वीं-17वीं शताब्दी का एक प्रमुख लक्षण "पोर्टफोलियो पूंजीवाद" का उदय था। कुछ **विद्वानों का** मानना है कि भारत में व्यापार गतिविधि उन व्यापारियों के हाथों में केन्द्रित थी जिनके पास कोई राजनैतिक अथवा सैनिक शक्ति नहीं थी। हालांकि, हाल ही में (संजय सुब्रहमण्यम द्वारा) यह तर्क दिया गया है, खासतौर से कोरोमण्डल के मामले में, कि राजस्व के ठेकेदारों (अधिकांशतः **पलाईक्कारारों**) ने अर्थव्यवस्था के विकास में सकारात्मक योगदान किया। राजस्व की वसूली की अपनी भूमिका के अलावा वे कृषि संबंधी व्यापार, सिंचाई का विकास, जहाजरानी एवं बैंकिंग का विकास करने में भी संलग्न रहे।

हमें इस काल में विभिन्न तरह के व्यापारियों की मौजूदगी के प्रमाण मिलते हैं, आर्मीनियाई, पुर्तगाली, तेलुगु बालीजा नायडु, चेट्टी, कोमाती, अरब, गुजराती, इत्यादि। अन्तर्देशीय व्यापार अधिकतर मुस्लिम मोपला व्यापारियों के हाथों में केन्द्रित था। कनारा तट पर हिन्दू तथा जैन सरदार मुख्य लाभार्थी थे, जबकि कोरोमण्डल तट का नियंत्रण मुख्यतः अरब, मारक्करार (धर्म परिवर्तित), तथा मोपलाओं के हाथों में था।

कुछ **विद्वानों** का मत यह है कि दक्षिण भारत की अर्थव्यवस्था 16वीं शताब्दी में गिरावट का शिकार नहीं हुई थी, जैसा कि अन्य लोग मानते हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि **नायकों** ने बाज़ारों तथा शहरों आदि का निर्माण करके आर्थिक गतिविधि को तेज़ किया था। 1565 के उपरांत लगातार युद्धों के जारी रहने संबंधी तर्क का खंडन इस आधार पर किया गया है कि यह एक सामान्य लक्षण था जो कि आरंभिक शताब्दियों के दौरान भी विद्यमान रहा था।

बोध प्रश्न 3

1) "16वीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारतीय राज्यों में केन्द्रीकरण के लक्षण दिखाई पड़ते हैं।" टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) गोलकुंडा के कुलीन शासक वर्ग की प्रकृति एवं गठन पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

....

3) "पोर्टफोलियो पूंजीवाद" को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

3.8 सारांश

16वीं शताब्दी के दक्खन तथा दक्षिण भारत की राज्य व्यवस्था संहारक युद्धों से घिरी रही थी। इस शताब्दी ने विजयनगर साम्राज्य का पतन देखा। यह धारणा कि तालिकोटा की लड़ाई के बाद विजयनगर ध्वस्त हो गया तथा **नायकों** ने अपने स्वतंत्र राज्यों का निर्माण कर लिया पूरे तौर पर स्वीकार नहीं की जा सकती। विडम्बना यह है कि **नायक** सरदारों का विकास उस समय हुआ जब कि विजयनगर, कृष्ण देव राय के अधीन, अपने शिखर बिन्दु पर था। सेन्जी, इक्केरी, मदुरा तथा तंजावुर के शक्तिशाली **नायक** 1565 के बाद भी विजयनगर के शासकों के प्रति वफादार बने रहे और यह 17वीं शताब्दी के दौरान ही हुआ कि वैंकट प्रथम की नीतियों ने, उन्हें विद्रोह करने पर बाध्य कर दिया। 16वीं शताब्दी के विजयनगर की शासन व्यवस्था ने केन्द्रीकरण की तरफ बढ़ने की प्रवृत्ति दर्शायी थी। यह "वंशानुगत राजनीति" के उदय का काल भी था। इस काल के दौरान "पोर्टफोलियो पूंजीपतियों" के एक वर्ग का उदय हुआ जो महज शोषक ही नहीं थे अपितु उन्होंने आर्थिक विकास में काफी योगदान किया। इस शताब्दी में दक्खन तथा दक्षिण भारत में पुर्तगाली सत्ता का उभार देखा गया। दोनों राज्य व्यवस्थाओं में निरंतर युद्ध चलते रहने के बावजूद, समूचे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में, इस शताब्दी के दौरान कोई गिरावट नहीं हुई।

3.9 शब्दावली

अफाक़ी	:	मध्य एशिया (ईरान, ईराक, ट्रांसऑक्सियाना) से आया नया कुलीन वर्ग
आमिल	:	राजस्व की वसूली करने वाला
बगलाना क्षेत्र	:	आधुनिक नासिक जिले के उत्तर-पश्चिमी कोने में घटमाथा क्षेत्र के उत्तर में स्थित उपजाऊ क्षेत्र, जहां सालहर, मुलहर तथा हतगढ़ के मजबूत किले हैं, हतगढ़ का किला गुजरात से आने-जाने वाले मार्ग की सुरक्षा करता था। यह इलाका खानदेश, गुजरात, अहमदनगर अथवा मुगलों के आधिपत्य को, परिस्थितियों के अनुसार मान्यता देता रहा
जनमन	:	वंशानुगत स्वामित्व
कुडिनिंगदेवदाना	:	**देवदाना** (मंदिर की भूमि) भूमि सैन्य सरदारों को कनीप्पारू (जमीन के पट्टे) के रूप में दी जाती थी
दक्खनी	:	दक्खन का परंपरागत कुलीन वर्ग
मुआमला/क़लाह	:	बीजापुर में इन शब्दों का प्रयोग साम्राज्य की भूमि के लिए किया जाता था, हालांकि **मुआमला** व्यापार और आवागमन का केन्द्र था जबकि **क़लाह** पश्चिमी घाट से लगे हुए सामरिक महत्व के स्थल थे
नायक	:	सैन्य सरदार
सहयाद्रि पर्वत मालाएं	:	पश्चिम में स्थित पर्वत शृंखलाएं जो ताप्ति नदी के दक्षिण से शुरू होती हैं, ये पश्चिमी घाट के नाम से भी जानी जाती हैं

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आप इनकी भौगोलिक स्थिति तथा विशिष्टताओं की चर्चा करें। भाग 3.2 भी देखें।
2) 1) **आदिल शाही**, 2) **कुतुब शाही**, 3) **बरीद शाही**, 4) **इमाद शाही**, 5) **निजाम शाही**।
3) i) × ii) ✓ iii) ✓ iv) ×

बोध प्रश्न 2

1) इनके नाम तथा भौगोलक स्थिति बताइए। देखें भाग 3.4 तथा उपभाग 3.4.2
2) **नायकों** के विकास के विषय में लिखें। देखें उपभाग 3.4.1
3) आपको यह बताना चाहिए कि क्या 1565 के बाद भी **नायक** विजयनगर के प्रति वफादार बने रहे या उनके संबंधों में कोई अंतर आया। देखें उपभाग 3.4.1
4) यह बताइये कि वे कौन थे और संक्षेप में जमोरिन व पुर्तगाल के संबंधों के विषय में चर्चा कीजिए (देखिए उपभाग 3.4.2)।

बोध प्रश्न 3

1) यह बताइये कि दक्षिण भारतीय राज्य की प्रकृति में क्या परिवर्तन आए और क्यों? देखें भाग 3.5
2) यह बताइये कि गोलकुंडा के शासकों ने स्थानीय कुलीन वर्गों को केन्द्रीय सत्ता के अधीन क्यों बनाए रखा। मुस्लिम कुलीन वर्गों की भी चर्चा कीजिए। संघटन में कुलीनों के विभिन्न वर्गों के बारे में बताइये (देखें भाग 3.6)।
3) देखें भाग 3.7